

डॉ. (श्रीमती) शेफालिका वर्मा

जन्म—९ अगस्त, १९४३

शिक्षा—"कामायनी और उर्वशीमे नारी चित्रण" शोध पर पटना विश्वविद्यालय सँ पी० एच० डी०' क उपाधि प्राप्त.

उपलब्धि—७४क सर्वश्रेष्ठ गद्य लेखिकाक लेल महा० महो० डॉ० उमेश मिश्र स्मृति पदक डॉ० बाबूराम सक्सेना द्वारा इलाहाबादमे प्राप्त, संगे 'काव्य विनोदिनी'क उपाधि सेहो, 'रिफरेन्स एशिया'क हूजहू वोल्यूम II मे बिहारक एकमात्र महिला साहित्यकारक जिनक परिचय प्रकाशित. पेनगुइन सीरीज ऑफ इंडियामे अलिन आर० के० जिडे, शिकागो वि० वि० द्वारा हिनक कविताक अंग्रेजी अनुवाद संगृहीत. हिनक कविता सभक अनुवाद हिन्दी, अंग्रेजी, उड़िया, गुजराती, डोगरी आदि कतेको भाषामे भेल अछि.

संपादन कार्य—पटनासँ प्रकाशित हिन्दीक बाल पत्रिका 'चमकते सितारे'क संपादन ७-८ बरस धरि, किछ काल लेल मैथिली 'टटका'क सह संपादन सेहो.

सामाजिक कार्य—सहरसा नगरपालिकाक आयुक्त क्य बरिस धरि, संगे कतेको सरकारी, गैर सरकारी समितिक सदस्या रहलीह.

प्रकाशन—मैथिली—विप्रलब्धा (कविता संग्रह), स्मृति रेखा (संस्मरण संग्रह), एकटा आकास (कथा संग्रह), यायावरी (यात्रा वृत्तांत).

हिन्दी—ठहरे हुए पल (कविता संग्रह).

शीघ्र प्रकाश्य—अर्थयुग (कथा संग्रह), अनाम अनुभूति (कविता संग्रह), नागफांस (उपन्यास), रजनीगंधा (कविता संग्रह), आ बान्ह टुटि गेल (यात्रा वृत्तान्त).

सेवा—सर्व० राम० महा० सहरसाक हिन्दी विभागाध्यक्ष,

संप्रति, हिन्दी विभाग, ए० एन० कलिज, पटना.

साहित्य अकादमी दिल्लीक मैथिली केर सलाहकार समितिक सदस्या,

कोसी क्षेत्रीय महिला साहित्यकार संघक कार्य० अध्यक्ष.

भा
वां
ज
लि

—शेफालिका वर्मा

भावांजलि

(गद्य गीत)

डॉ० शेफालिका वर्मा

प्रकाशक :

भाखा प्रकाशन

पटना

भावांजलि

(गद्य गीत)

प्रकाशक :

भाखा प्रकाशन

पटना

प्राप्ति स्थान :

ललन कुमार वर्मा

एडवोकेट, पटना हाईकोर्ट

7/C-14, प० आनन्दपुरी, पटना-1

दूर०—260869

प्रथम संस्करण, 1996

मूल्य : अजिल्द—20/- टाका मात्र ।
सजिल्द—35/- टाका मात्र ।

मुद्रक :

शंकर मुद्रणालय

मुसल्लहपुर, पटना-6

BHAWANJALI

(Gadya Geet)

BY—DR. SHEFALIKA VERMA

दुई शब्द

भावांजलि एक निसासेँ पढ़ि गेलहुँ । नीक लागल ! किएक से कहब कठिन । भए सकैत अछि—मैथिली सँ प्रेम अछि तेँ, लेखिका सँ आप्तता अछि तेँ; आकि सरल सुबोध छैक तेँ । कलेवर भनहि गद्यक हो भाव सभक विशुद्ध गीतक छैक । मनमे कहल, जँ लेखिका छन्दक कञ्चुकी मे बान्हि देने रहितथि तँ 'भावांजलि' गीतांजलि भए जाइत । एकटा इहो विशेष बात जे भावांजलि प्रकीर्ण संग्रह नहि, एक रसमे बोरल एक भावभूमि पर ठाढ़ अछि । [illegible] 'एकटा गुलाब छल' मन पढ़ैत अछि। कालिदास सँ लए विद्यापति धरि पढ़ैत-पढ़ैत शृङ्गार-रस सँ मन उमठि गेल अछि । मुदा एकर शृङ्गार ने भोजपुरी फिल्मी गीत जकाँ अश्लील अछि, ने कालिदास जकाँ [illegible] । एहिमे जे रस अछि से दैहिक नहि; आत्मिक वा आध्यात्मिक अछि । [illegible] विराट् केँ छूबैत तँ बिन्दु सिन्धु केँ । एहि मे अछि छायावाद-युगक भावुकता, कोमलता, सरसता आ प्रशान्ति । की एकरा कविताक, वास्तविक कविताक प्रत्यावर्त्तन नहि कहि सकैत छी ? एम्हर मैथिली कवितामे अधिकतर राजनीतिक भ्रष्टता, आर्थिक दीनता आ वर्तमान स्थिति पर खौंझाहटि इएह सभ भेटैत रहल; शाश्वत मूल्यक वस्तु बड़ थोड़ । तेँ भावांजलि मे शाश्वत मूल्य पाबि विशेष आह्लादित भेलहुँ ।

पूर्वी पटेल नगर, पटना-23
9-5-96

—गोविन्द झा

समर्पण

"प्राचीन ऋषिमुनिक आश्रम सन पावन
शुभ्र स्निग्ध हमर ई डुमरा गाम
बाबूजीक विश्वास माँक ममत्वसँ भरल
इ सुन्दर शुचि-धाम ।"

—(एहि पोथी सँ)

प्रातःस्मरणीय स्व० बाबूजी एवं पुण्यमती माँ केँ

एहि पुत्र-वधूक तुच्छ भाव-भेंट—

—शेफालिका

1

आँजुरि भरि भाव लय अहाँक समक्ष नमित
भ' रहल छी प्रभो !
मोन प्राण काँपि रहल अछि, भयानुभूतिक
अवसाद घेरि लैत अछि
हम अहाँक योग्य नइ छी देवता
कोना अर्घ्य दी एहि भावांजलिक ?

आकाशसँ ऊँच सागरसँ गंभीर अछि प्रेम अहाँक
वायुक प्रबल वेग,
प्रदीप्त अग्नि आ जलसँ तरल अहाँक
सिनेहक छाहरिमे
चंचलत्वसँ सूक्ष्म हम भ' जाइत छी
सत्य शिव सुन्दर भावसँ निर्मल बनि जाइत छी
हम ओहि नवपल्लव सन छी प्रभो !
प्राप्तिसँ शून्य
आशासँ परिपूरित
विरहमे जरैत, मिलनक उन्मादसँ
दीपित !

●

अहाँक शीतल चंदन छुअन
हमर मस्तक पर सिहरल।
हृदयक घनीभूत वेदनाक प्रवाह थम्हि गेल
निराशाक तम सिन्धुमे
उमड़ल मोन केँ आशाक आकाशदीप
भेटि गेल
थाकल ठेहिआयल हमर इच्छा
अहाँक स्नेहिल संस्पर्शसँ
जिनगी जी गेल
मूर्च्छित मानस हमर, स्नेह संबल पावि
नूतन साँस लेम' लागल
प्रिये !
अहाँक एहि स्नेहानुदान केँ
दूर्वादल सन धारण केने छी
पीड़ित मानवतामे करुणाक'
प्रवाह प्रदान करवाक चेष्टा करैत छी
मुदा
अहाँ कत' छी—कत' छी अहाँ ?

●

हमर समस्त तन
सितार जकाँ बाजि रहल अछि
मोनक तार पर एके गीत बाजि रहल अछि
अहाँसँ एकाकार हेवाक,
अहाँमे
विलय हेवाक
हमर हृदयक सिंहासन पर
अहाँ कोना बिराजमान भ' गेलौं
हमर देवता !
मोनक ओ अनछुअल कोना
अहाँक स्पर्शक प्राप्ति लेल
आय धरि
उद्वेलित छल, आब
उन्मादित भ' उठल
"सकल देह मम वीण सम बाजे" !

●

4

ओहि बसन्तोत्सवमे अहाँक अदृश्यकर
अंगराग लेपि गेल हमरा
चानन पीर जगाय गेल।
अहाँक स्वप्निल आंगुरक सिहरन
अहाँक अदृश्य हाथक कंपन
समस्त तनमे संगीत लिखि गेल
हमर समस्त मोनकेँ
बाँसुरी बनाय गेल

भय होयत अछि प्रभु
ओहि संगीतकें अहाँ बिसरि नइ जाय
मुरली उपेक्षित नइ राखि दी अहाँ
समग्र धरती समस्त आकासक विस्तृतिमे
समाय नइ पाओत दुख हमर
आह !
प्राणक आकुल नाद !

5

अहाँक ओ अधर स्पर्श !
मोन-प्राणकें कविता बनाय गेल
अधरक गुलाब विहँसि गेल
ठोर हमर गुलाब बनि गेल
सूखल जीवन
प्रेमक रंगसं रंगि गेल
तनक हरीतिमा मिलन-गीत गाबि गेल
मोनक मोर नाचि गेल
किन्तु......
बंद पलक अचकहि खुजि गेल
नीन्न टुटि गेल
गुलाबक पंखुरि झरि झरि धरती पर
खसि पड़ल
अहाँ कतौ नय छलौं-कतौ नय
मुदा
प्रकृतिक कण कण अहाँकेँ धारण केने
नाचि रहल छल
हम नमित भ' गेलौं...

6

प्रभु !
अहाँक पाबि हम अहाँक जतेक ल'ग छी
अहाँकें नइ पाबि
अहाँसं बेसी निकट भ' जाइत छी
हम अहाँकें पाबि पयलौं
हेराय पयलौं।
नदी जाहि तरहे सागरकें पर्वत अछि
हम अहाँकें
प्रतिपल पाबि रहल छी
अहाँकें नइ पओनाय
पाबि लेनायसँ बेसी महान् छैक
अहाँ ओहि पार छी मुदा
हमर अन्तरमे छी।

अहाँ हमर छी या नइ
इ चिन्ता हमर नय थीक,
हम अहाँक छी—एहि स्वप्नक संगे
भवसागर पार लगा लेब
जतेक दूर अहाँ जायब
हम अहाँक समीप प्रतिपल अपनाकें पायब

●

(गद्यगीत)

7

हे हमर मृत्यु !
अहाँक प्रेममे आबद्ध हम
जल बिहीन मीन सन छटपटा रहल छी
माया, मोह तृष्णासँ
लड़ त-लड़ त थाकि गेल छी हम
अपन आनक व्यापारमे
हेराय गेल छी हम
व्यथा वेदनाक आभूषण पहिरि
हृदयक अन्तर्पट खोलि
विस्मृत मुग्धा सन
बाट अहाँक ताकि रहल छी
हमर एक-एक साँसमे अहाँक आकुल
आह्वान अछि
अहीं सत्य छी
प्रभो-दर्शनक एकेटा मार्ग छी.

●

(गद्यगीत)

8

नइ जानि किएक कँपइत अछि
एक टा अनाम अनुभूति…
…अहाँ आबि रहल छी
मलय पवनक तीव्र आ मंद झोंकमे
अहाँक आगमनक ध्वनि
नुकायल रहै'छ
अन्तर आकुल नादसँ भरि उठैत अछि
डारि-डारि पात-पातमे
अहाँक अरूप रूपक संधानमे जागि जायत छी

हमर आत्मा कतेक कल्प सँ
कतेक युगसँ भटकि रहल अछि
नहि जानि कोन श्रापसँ
धरती पर आबि गेल छी
द्वन्द्वमे जीबैत मानवक मध्य
द्वन्द्व बनि रहि गेल छी।

●

9

जखन जखन अहाँ हमरा लग अबैत छी
छुबि नइ जानि कौखन
उरमे मधुर पुलक भरि दैत छी
अहाँक मृदुल
स्नेहिल संस्पर्शक तरंग
हृदयमे बेसुधिक सिन्धु बनि
पसरि जायत अछि
मंत्रमुग्ध हमर कवि ओहिमे डूबि जाय'छ
आ हम ठाढ़
असगर असहाय अवाक्
अनिर्वचनीय अनुभूतिक कोमल-कोमल
कली चुनि
ओकरा गीतमे गाँथवा लेल
सजाय राखबा लेल
छन्द खोजैत रहि जायत छी
एहि चित्र विचित्र विराट के
निहारैत रहि जायत छी.

●

गोधूलिक प्रहेलिका पसरल चारूकात
प्रकृति शांत निष्पंद
रजनीगंधासँ सिक्त मधु बयार
हमर तनसँ लिपटि जायत अछि।
हम अपन शांत देह
अशांत मोन नेने
ओहि दिसि ताकि रहल छी जाहि बाटे
अहाँ आयब
दूर-दूर धरि ओ पगडंडी विधवाक सिउथ जकाँ
सून पड़ल अछि
जाहि पर केओ नइ आओत
केओ नइ
अहाँ सँ मिलबाक आकांक्षा हमरो तँ
ओहि सीउथ जकाँ अछि
जाहि ठाम कोनो सोहागक सूरज
नइ उगत
नइ चमकत
मुदा, प्रभो
पूरब दिसामे पसरल ओ
सिनुरायल आभा
अहाँक आगमनक राग गाबि रहल अछि···

●

(गद्यगीत)

आय अहाँ हमरासँ विलग भ' रहल छी
मिलनक क्षण आयल कत'
तखन विलग हेबाक प्रश्न की ?
मिलनोत्सुक मोन हमर
एकेकटा भावनाक हार बनाय
मिलन-पर्वक प्रतीक्षामे छल
मुदा,
मिलनसँ पहिनहि विच्छेद-पर्व ?

रजनीगन्धा
ताराक वरमाल पहिरि सिसकि रहल
कँपइत सिंगरहार दर्दसँ तीतल
आकासक अन्तरसँ झहरैत
मेघधार शीतल।
अदृश्य अरूप अयलौं अहाँ
आब प्राण बनल जाइत छी
जीवनक मधुरिम क्षणक
मुस्कान बनल जाइत छी ।

●

(गद्यगीत)

12

साजक तार जकाँ हमर बन
अहाँक अयबाक राग नेने काँपि-काँपि
उठैत अछि

बाट जोहि रहल छी ओहि अतिथिक
जिनक आगमनक समस्त तिथि पर
कालक सियाही खसि पड़ल अछि

एकान्तक कैक्टससँ छटपटाइत
लहुलहुआन हमर अंतर
अहाँक अनलिखल आखर हँसोथि
रहल अछि
हमर समस्त तन पर अहाँक स्मृतिक
रक्तफूल खिलि-खिलि उठैत अछि.

●

13

अहाँ सरल शिशुप्राण अबोध !
स्वप्न लोकमे सुनल अहाँक किछु शब्द
मुदि नहि ओ शब्द अहाँक नइ थीक
ई तँ अपन आनक थीक
धरती पर उगल मानवक थीक

ओह, ओ शब्द !
सचेत अछि जेना
रजनीक शीतलमय अमृत आमन्त्रण
ओहिसँ एकाकार हेवा लेल
पुष्करणीक तीर पर ग्रीष्मक साँध्य बेला
सहज प्रखरता आ ताप तजि
शिथिल विश्राम लेल प्रदीप्त रवि गेल होइ
आ
लहराइत सागरक अनन्त जल विस्तार
क्षितिजकेँ अपन स्नेहक रंगसँ
अपन सम्पूर्ण भावना कलाक संग अभिव्यक्त
कामनासँ रँगल चित्रपट पर
बिना अपन कालिमा उझलि देने होय
तहिना
अहाँक ओ शब्द···!!

●

14

अहाँ हमर आँखिमे स्वयंकेँ खोजैत छी
अपनाकेँ नहि देखि हतास भ'
जायत छी
अबोध !
सरिपहुँ, अहाँ ओहिठाम नइ छी
अहाँक हम अपन प्राणमे सहेजने छी
आँखिमे रहैत अछि परछाहीं सभक
अमोल निधि धरती मे गाड़ल
जायत छैक अप्रकट।

अहाँक मर्मभेदी कवि की प्रवास क'
रहल छल
हमर आँखि मे उपेक्षाक छाहरि देखल ?
कहि देब अपन अन्तर अवस्थित
ओहि संवेदनशील प्राणी केँ
सांसारिक प्राणी सन अहाँ पर
अविश्वास कर' तँ करय
हमरा पर अविश्वास कय
नरकक भागी नइ बनय
निशाक जीवन मे ज्योतिक जीवन छैक
नहि होयत तँ
नइ हेतीयैक हमर सभटा गीत अहाँ केँ
इ संबंध
प्राण प्राणक अछि
जन्म जन्मक अछि अटूट—अविच्छेद्य...

●

15

प्रियतम !
अहाँक अभिसार पथ पर बिछल हम
समर्पणक फूल छी, सुधिक देहरी
पर जरैत मोनक निर्मम पीर छी
एहि पार की ओहि पार की सांसक जरैत
संसार की, आह चाह मे पड़ल कटुताक अगार को
स्मृति चित्र पर खिलल वेदनाक शूल छी
निस्तब्ध सरिता सन जीवन दीपशिखा निर्वात्
कुसुम कपोल पर अंकित अश्रु आखर प्रात
लालिमाक हिमतरंग पर कंपइत कूल छी

हमर अव्यक्त ! यदि हम अहाँकें व्यक्त क' देब
तँ अहाँ एकटा सर्द आह बनि हमरा सँ दूर चलि जायब
सर्वदा लेल, अहाँ हमर अन्तर मे अवरुद्ध रहु
ताहि सँ हम अपन नोर मे अहाँक
विकलताक ज्वार भाटा निरंतर देखैत रही
जीबैत रही—

●

16

अहाँ केँ देखलौं लागल गीतक कोनो धुन
जकरा हम बिसरि गेल छलौं,
नचैत
ठोर पर आबि बैसल,
अधरक पाटल पर ओस बून
सन कँपइत
धुन !

अतीतक हेरायल स्वप्न आँखिक समक्ष
जिनगीक गजल गाबैत
थिरकि उठल
शर्बरीक खसैत अश्रुधार
सांसक विह्वल
अस्पष्ट आर्त्तनाद
व्यथित करोटक मूक आह,
जेना अहाँक समक्ष
अनगिन उपालंभ नेने
माथ नुघरौने ठाड़ होय—

•

17

कोनो अभाव नइ तैयो अभाव मे जीवि रहल छी
सुधा मे भंडार अमृतक
तैयो जहर पीबि रहल छी ।
निर्मम !
ई संबंध, रिश्ता-नाता
एतेक जाल अहाँ किएक पसारलौं
मायाक सूतिक लेल बंधनक एतेक गिरह किएक बान्हलौं ?
चीं चीं चिड़ँ चुनमुन जनमतहि
पंख पसारि उड़ि जाय'छ
उन्मुक्त निर्बन्ध मुक्तिक गीत गबैछ ।
मुक्त गीत के तनक कारा किएक ?
मनक आस के जानवा लेल संबंधक
परिभाषा किएक ?
अहाँ कठोर छी प्रभो,
काश ! अहाँ मानव बनि भोगि सकतौं
[illegible]
अभावमय जीवन केँ !

•

हम अपराध पर अपराध केने जायत छी

प्रत्येक बेर स्वयं केँ उठएवाक

संकल्प लैत छी ।

जिनगी मे किछ करवाक शक्ति जगबैत छी ।

प्रकृति की एक दोसराकेँ क्षत करवा लेल

बनल अछि

हृदय की लौहागार मात्र थीक

जाहिठाम

एक दोसरा पर प्रहार करवाक अस्त्र-शस्त्रटा

गढ़ल जाइत अछि

चोट की करुण कोमल गात लेल

बनल अछि ?

समस्याक समाधान खोजैत रहि जायत छी

अपराध पर अपराध करैत जायत छी ।

हम अपराधिनी छी प्रभु !

अहाँक समक्ष नतमस्तक छी

जानिकें, अनजानहि, कतेक मोन

[illegible] कैने होयब हम

कतेक भावनाक हिंसा कैने होयब हम ।

सांसारिक प्राणी जकाँ

मात्र मायाक जीवन जीवैत रहलौं ।

अहाँ हमर प्रतिपरीक्षा नइ लेब प्रभो !

सबटा सत्य उजागर भ' जायत

अहाँ हमरा दंडक बदला

अपन ममत सँ भरि देब

हमर पीड़ा पर चानन क लेप लगा देब !

हृदय तँ अहाँक मन्दिर थीक

[illegible]

बेलगाम मन जकाँ कुदैत फनैत

[illegible] बाट पर भगैत रहैछ

ई तँ अहींक वरदान थीक !

इ देह अहाँक देल अछि
इ मोन अहाँक देल अछि
'बड़ भाग मानुष तन पावा'
तखन पाप-पुण्य
आचार-अनाचार
हिंसा-अहिंसाक भेद किएक—
'मम इच्छा सर्वतोनास्ति दैव इच्छा प्रबल'।
हम जे करैत छी
जे जीवन जीबैत छी, नीक वा बेजा
ओकर उत्तरदायी हम कोना ?
हम अहाँक हाथक कठपुतली छी
माया मोहमे लिप्त ।
अहाँ हमरा जेना चाहैत छी, नचबैत छी
अहींक इच्छानुसार हम जीबैत छी
तखन दोष-अदोषक बटखरा
मानवक हाथ किएक ?
प्रभु ! अहाँ दोषमुक्त नइ छी......

●

पुष्प गंध, गानमे जे आनन्द अछि
हास, रुदन, प्रकाश-अमा;
[illegible] मध्य जे
विश्वास अछि
प्रभो ! जे अहाँक अस्तित्व थीक
क्षण-क्षण हमरा घेरैत
प्रति पल हमरा प्रेरैत ।
विकल छी मुक्त हेवा लेल
देह रहितो विदेह हेवा लेल ।
जिनगी भरि सभक दुःख ओढ़ैत रहलौं
सभक विश्वास झाँपैत रहलौं
हमर दुख कैओ नहि ओढ़ि सकल
हमर व्यथा कैओ नहि बुझि सकल
[illegible] मनमे एहि आकांक्षा लेल,
हम निरंतर तप्त भ' रहल छी
दग्ध भ' रहल छी ।
हमरा मुक्त करू ईश्वर
आकांक्षा रहित करू… ..

●

दुख आ ताप सँ जरैत मानव

निरंतर भागि रहल अछि

कंचन कामिनीक पाछा हफिस रहल अछि

जीवन जीवाक साधन विस्मृत भ' गेल।

पृथ्वीक अवशिष्ट उच्छ सँ

सभ अपन स्वार्थ साधि रहल अछि

रूप-अरूप, पाप-पुण्य, सद्-असद्,

विपद-संपद

सभ भाव अभिशप्त भ' गेल

अभिशापक परिक्रमा करैत मानव

जगतक उपहास

बनि गेल।

माँ!

अहाँक मृदुल स्वर लहरी सँ हम बाजब सीखलौं

अहाँक कोमल आंगुर सँ चलब।

अहाँक प्राण सँ हमर नव प्राण

स्पन्दित भेल

अहाँक हँसी मे अधर हमर

मुकुलित भेल।

नोर हमर, अन्तर उदास क' गेल अहांक

पीड़ा दुखित।

आइ अहां हमरा सँ दूर चलि गेलौं

अनचोके हम पंथ भ' गेलौं।

अंतरिक्ष दिसि गबैत पंछि देखि

लगैत अछि जेना

हमर अन्तर-संदेश लय अहाँ लग जाइत होय।

आकासक अनन्त विस्तार केँ

अहाँक आँचरिक छाहरि बुझि

ओहि नील दुकूल मे

अश्रुमय भ' जायत छी—हमरा के चीन्हत?

तखनहि हमर बाल विहग हमर आँचर तीरि

हमरा 'मां' बनाय दैत अछि

लहरिक नर्त्तन
परिवर्त्तन
दिशि दिशि प्लवन व्योमक मोहभ्रम
सून अन्तर सून्न धरा
चेतना पहुँचि गेल
शून्यक महानिलय मे ।

अनस्तित्वक चिदाकाश अक्षय मे,
आत्मिक अतृप्त संवेदन अछि
सभ किछ पाबि
मोन किएक आइ निर्धन अछि ?

× × ×

मानवक मोने सुख दुखक कारण छी
मानव अपन विचार सँ
अपन मोनक निर्माण करैछ
हम जेहेन चिन्तन करैत छी
मोन हमर बएह बनि जायत अछि।
मोनक स्वरूप-निर्माण, चिन्तन सँ
भ' जाय'छ
हमर विचार कें सत्य शिव सुन्दर सँ
परिमार्जित करू प्रभु !

●

गंगे !
की केओ अपना लेल बान्हि सकल अहाँ कें ?
की अहाँ कोनो एके गोटे लेल बहि रहल छी ?
अहाँ तँ सबहक छी
नइ जानि कतेक पुजारी अछि अहाँकें ?
नइ जानि कतेकक उद्धार अहाँ
कयलौं
केकर-केकर स्मरण होयत अहाँ कें ?
फेर किएक
पुण्यमती गंगे,
हम अहाँकें बान्हबा लेल व्याकुल छी ?
हम अहाँक एतेक पैघ भक्त स्यात् नइ छी जे
अहाँ हमरा मोन राखी !
हम की करी माते ?
माय कहने छलीह
जखन
संसारक बाड़ी मे प्रथम स्वर
हमर बिहुंसल छल
हम बजने छलौं—
"गं गं गं गेऽऽ"

●

हमर हृदय मरूथल बनि जाइत अछि
अहाँ
मेघ बनि बरसि जाइत छी
हम कृतज्ञ भ' जाइत छी।
आइ,
फेर मरूथलो रौद हमरा तप्त
क' रहल अछि
माया मोहक काँट सँ
क्षत क' रहल अछि।
एहि मरुभूमि मे निरर्थक बरसब
अहाँ के नीक नइ लागल

सभ किछ तँ अहींक देल अछि
सत्य-असत्य, पाप-पुण्य, आदर-अपमान !
अहींक देल आस-निरास मे

हम झुलि रहल छी
संध्याक वीतराग सूरज होय
वाकि भोरक अरुणाभ आकास !

●

अहाँ सागर छी
शान्त प्रशान्त !
ज्वार भाटा उठैत अछि हमर अन्तर मे।
अहाँक सूक्ष्म तत्वदर्शिनी दृष्टि सँ
अनदेखल नइ रहैत होयत, जानैत छी हम
एकटा संगी लेल भरल संसार मे
छटपटा रहल अछि मोन हमर
जकरा लग अन्तरक टूटल-भाङगल
पूर्ण-अपूर्ण कामना केँ शब्द द' सकी ।
परिश्रान्त सन हमर हाथ आकास दिसि
उठैत अछि
रोम रोम अक्षत कण जकाँ पुलक सँ
छिरिआ' जाइत अछि
अहाँक आशीर्वादी कर कमल हमर हाथ केँ
थाम्हि नेनें छल।

●

ईश्वर !

हमरा शक्ति दिय'

हम केकरो अधलाह नइ बाजी

केकरो अधलाह नइ सुनी ।

एहि सँ हमर मोन पर

नीक संस्कार नइ पड़ैत अछि

हमर नस-नस विष-रस सँ

सिक्त भ' जायत अछि।

कोनो आलोचनाक उपरान्त मोन

उद्भ्रान्त भ' जाइत अछि

अपन जीवन वृथा बुझि पड़ैत अछि।

हम केकरो प्रशंसा किएक नइ क' सकैत

छी प्रभो ?

एहि लेल कोनो पूँजीक आवश्यकता नइ

एहि लेल कोनो निर्धनता नइ

तखन हम आनक बड़ाइमे एतेक

कंजूस किएक ?

प्रभो ! हमरा अपन 'अहं' सँ निकालि

उदार बनाउ ·····

मंदिर जायत छी

अपन मोन केँ निर्मल करबा लेल

चैनक छाहरि लेल ।

देखैत छी समस्त भीड़ आर्तनाद क' रहल छैक

माँ-माँ– माँ—माँ

हम ठकमका जायत छी

हमर पएर जमि जायत अछि

ग्लानि मे मोन डुबि जायत अछि

अपन असहाय अवस्था देखि ।

एतेक स्वर मे हमर स्वर कत'

बिला जायत

की माता धरि पहुँचि पाओत ?

तखनहि लगैत अछि

दुख हमरे टा नइ घेरने अछि

हमही टा असगर नइ छी

एक सँ एक दुखी जीव सँ भरल इ ससार

अछि।

हम जीवन केँ अहाँक प्रसाद बुझि,

ग्रहण करैत, ओहिठाम सँ चुपचाप

घुरि अबैत छी ।

भाग्यवान अछि ओ मानव
जकरा चिन्ता करवाक अवसर नइ छैक ।
"नास्ति सिद्धिरकर्मणः"
बिना पुरुषार्थक कोनो कर्म संभव नइ
बिनु उद्योगक जीवन सफल नइ
दुख आ सुख जीवनक
अभिवाज्य अंग थीक
निराशा अपमान आशा आदरक संग थीक ।

एहि क्षणभंगुर जीवन मे
कर्मयोगक कर्म
हमर धर्म थीक
काँट मे बिहुंसल गुलाब
जीवनक मर्म थीक ।

●

जे एक दोसर पर कादो फेकैत
छथि, प्रभु !
अहाँ हुनका पर दया करु
जे
अपन घर छोड़ि
आन घर मे हुलकी दैत छथि
भगवान ओकरा पर
तरस खाउ
अपन मोन कें नइ देखि
जे
आनक मोनक रहस्य बुझवा लेल
बेकल छथि
प्रभु, अहाँ ओकरा क्षमा क' दिय' ।

मानव-जीवनक धर्म,
मानवताक कंटकित पथ पर
इजोत बनि अहाँ
पसरि जाउ
विभ्रमित मोन कें
बाट देखाउ......।

●

प्रभु ! अहाँ एहेन जीवन किएक दैत छी
जाहि ठाम सभ अपन स्वार्थं लेल
जीवैत अछि ?
हमर हृदयमे सतत राम रावणक युद्ध
चलैत रहैछ
नीक विचार जीतैत अछि
हम राम बनि जायत छी
अधलाह जीत' लागैछ
रावण बनवाक भय सँ हम
काँप' लगैत छी ।

शुभ-अशुभ, सद्-असद्क महाभारत सँ
हमर अन्तरकेँ बचाउ प्रभो !
हमरा कौरव बनवा सँ बचाउ नाथ !
श्रद्धा आ इड़ा सँ संतुलित
राग-द्वेष सँ रहित
हमरा 'मानव' बनवाक आशीष दिय'... ...
नाथ !

जिनगी भरि अपन आनकेँ
जोड़वाक खेल खेलैत रहलौं !
हूँ खेलहि तँ ?

आय सभ किछु एकटा खेल लागि
रहल अछि
एकटा निरर्थक प्रयासमे बीति गेल
जिनगी हमर
विश्व बंधुत्वक कल्पना करैत
रीति गेल जिनगी हमर
हम तँ अपनो लोक केँ नइ जोड़ि सकलौं

उपेक्षा, तिरस्कार, अपमान अनादर
नीलकंठ जकाँ पीबैत रहलौं
अन्तरमे आगि जरैत छल
प्रतिशोधक लहरि उठैत छल ।
अहाँक
सिनेहक नोर शीतल क' दैत छल
। हमर ताप तप्त अन्तर केँ ।
सपना छल देखि एकटा स्नेहक संसार
हृदय हृदय केँ जोड़ैत प्रीतक रसधार !!

आम, लताम, सीसो, सपाटू, नारियल वृक्षक फुनगी सँ
धरती केँ अशीषैत चौन सुरूजक
किरण !

हेमन्त-बसन्तक सुन्नर प्रसून प्रसन्न ।

कोसी कछेरक प्रार्थना सदृश मंद मंद सुगंधित,
शीतल बयार

हवा सँ अठखेली करैत खेत मे गहूमक बालि

अनगिन हीरक जोत पसारैत मोइनक
जलधार ।

नाह पर बैसल हम अहाँ
पारिजात सुमन सन शुभ्र तारकक
ज्योत्सना परिधान

स्वर्गक मंदाकिनी तीर सँ बरसावैत जीवन-दान
ब्रह्मक थान सँ अबैत कीर्त्तन-गान

प्राचीन ऋषि मुनिक आश्रम सन पावन
शुभ्र स्निग्ध हमर इ हुमरा गाम
बाबूजीक विश्वास माँक ममत सँभरल
इ सुन्दर शुचि-धाम ।

●

भगवान !
अहाँ तँ मनुखक निर्माण केलौं
इ अमीर-गरीब के बनौलक ?
जाति-पाति, धर्म-अधर्मक देवार
के ठाढ़ केलक ?
संबंधक इतिहासक पन्ना यांत्रिक युगक
बरखा मे गलि गेल अछि ।

भूख पिआस गरीबक मरि गेल अछि ।
पलास सँ आगि निकलि रहल अछि,
हवा सँ बाण

रेतकण कानि रहल वर्षा केँ
अभिमान ।

डोका, कांकोड़ करमी पर जीबैत
देह पर फाटल चीटल वस्त्र नेने
की ओकरा अहाँ हृदय नहि देने छी
की ओहि मे इच्छा कामना नहि
उपजौने छी
आँखि मे सपना नहि जगौने छी ?
तखन किएक गरीब आर गरीब
भेल जा रहल अछि ?
गरीबीक अभिशाप अमीरीक वरदान
भेल जा रहल अछि ।
की ओकर भगवान केओ आन छथि
छथि तँ के छथि ??

●

धरतीक कोर मे विहुँसैत
नान्हि नान्हि टा पौध सँ
वृद्ध बड़क झरैत पीयर पात बाजल—
—अहाँ युवा छी, शक्तिक उर्जा सँ भरल
अहुँ विशाल वृक्ष बनि सकैत छी
लोकक ठेही कें बिश्राम द' सकैत छी।
एहि लेल चाही धैर्य सहिष्णुता
विनयशीलता

'अहं' मे नय डुबु, शक्तिक अहंकार
मोन मे नय राखु
अहंकार सँ शक्ति क्षीण होइ'छ
धैर्यक नाश, क्रोधक वृद्धि होइ'छ।
क्रोध मानव कें मानव नय रह' दै'छ।

अहाँ आगु बढ़वा सँ पहिनहि
मौलाय जायब
विशाल वृक्ष बनवाक बदले सुखायल
ठारिक अवशेष मात्र रहि जायब।
कालाँतर मे पायब
अहाँ नहि तँ केकरो छाहरि बनि सकलौं
नहि कोनो अधरक सुखद सुस्कान।

●

(मधुगीत)

मानव !
अहाँ जीवन मे राग भरु, अनुराग भरु
चिरहासमय, उल्लासमय मधुमास
भरु मानव !

जीवन कें जीवन रह' दिय, एहि मे
मधु धार बह' दिय'

फेर अहाँ देखब कि अछि इ जीवन
शुभ सौभाग्यक पुलकित उपवन !
जीवन बिराटक दर्पण थीक
शोभा सुषमाक मधुबन थीक
आनन्द भरल कैलास लोक
नहि कोनो अछि रोग-सोक
शिव गौरीक नर्त्तन पावन

मधुमय मंगल, जीवन थीक इ जीवन !
शूल फूल वरदान थीक, स्वेद-कण मानव
मस्तकक सम्मान थीक
सम्मानित जीवनक आदर अहाँ बनु
मानव !!

●

(मधुगीत)

'संसार माया थीक' ज्ञानी-विज्ञानी
सभ बजैत छथि ।
मानव ईश्वर छोड़ि एहि मोह माया
ममता मे लिप्त रहैत अछि ।
जीवन संघर्ष मे लड़ैत
अहाँक देल शूल के ँ फूल बनबैत
ओकरा जीव' पड़ैत छैक ।
ओकरा लग कोनो विकल्प नइ छैक नाथ !
भवसागर पार करबा लेल
अहाँ सँ एकाकार हेबा लेल
इएह माया पतवार बनि जाय'छ ।
जीवन मरण अहाँक हाथ छैक
तेँ मानब के ँ जीव' पड़ैत छैक
अहाँक त्रिताप के ँ भोग' पड़ैत छैक ।।

प्रभो !
अहाँ सँ बिलग भ' विच्छिन्न
अर्चनाक कमलिनी सन हम जगती मे
आयल छी
नभक आँगन मे स्वर्ग के ँ खसैत तारक सन
खसैत छी ।
जग हासक एहि कलरव मे हमर अन्तर
सिसकि रहल
जीवनक विजन विपिन मे मोन पाखी उड़ैत रहल ।
भावनाक होली डहि गेल, वेदना अन्तर मे
नीड़ बना गेल
अभिलाषाक एहि सिसकी मे मुकुलित
नान्हि टा मोन हमर
अहाँक अन्वेषण मे
अहीँक अंश
अहीँक खंड
संसृतिक विकल राग संग
विलय हेबा लेल
विवश प्राण हमर—!!

निशीथिनी तीतल, जरि रहल प्राण हमर !

शीतल मलय पवन कय रहल
रजनीगंधा सँ मनुहार
बियोगिनी कुमुदिनी के भेंटि गेल
चानक मधु-प्रेमिल संसार।
मधु बरसाबैत एहि यामिनीमे
प्रभो !
जरि रहल मोन प्राण हमर
वक्षक पात-पातमे आकुल आह्वान
हमर।

मचलैत कामना के नीन्न कोना दय दी
अधरक पिआस बुझाबी
ओ आसव कोना दय दी
अहाँ हमर छी नाथ
इ भावक मोन कोना दय दी ?
रिक्त भ' गेल अछि हृदय-घट,
जरि रहल अछि जीवनक बाती
व्यथाक तममय आकास मे अधरो
बिसरि गेल आब प्राती !

हमर गीत

अहाँ चलि कोना पहुँचल ?
गीतक सुरभि उड़ि उड़ि
जगजग गमकाबैत अछि
विरहिन आँखि सँ ओसबून्न बरसावैंछ।

अहाँ गेलौं, चान गेल
चान सँ रुसि राग गेल
विच्छिन्न प्रसून सँ पराग गेल।
अधरक उषा गेल, गीतक ऋतु बीतल
पुरवाक झोंक सँ अहाँक यादि
मोन प्राण तीताय गेल
बिरही घन तरसि तरसि
बून्न बून्न बरसाय गेल।

हिम सँ भरल पर्वतक शिखर पर
सतरंगी रवि रश्मि मे
खोजि रहल छी, अहाँ केँ हम !

चकित विस्मित हमर आँखि
कुहेसक सागर में डुबल हेरायल
मौन मुग्ध मरालिनी सन
आत्मविस्मृत हमर साँस।

आसिनक कुमारि साँझ मे
प्रियतम सँ मिलवा लेल
श्यामल अवगुंठन मे आकुल।
ओहि स्पन्दन सँ
प्रकृतिक कण कण व्याकुल

●

शून्य शून्य मे झंकारि उठल
प्राण प्राण केँ
आर्त्त स्वरे बजाय बैसल।

दुई तीर सन सरिताक हम अहाँ प्रिये,
नाह कागजक बनाय
स्वप्न प्रीतक सजाय
छोड़ैत छी काल-धारक
प्रखर प्रवाह मे।
इच्छा कामना सँ, लदल तरणि
किछु दूर चलैछ, भसिआइत अछि
आ फेर
काल-धार मे डुबि जायत अछि।
विवश नयन सँ हम स्वयं केँ डुबब
देखैत रहि जायत छी
पागल मोनक थाह नहि पबैत छी।

●

केओ आबि हमर कान मे गाबि गेल
संगी ! फागुन आयल !
बौरायल मोन हमर, मोजरायल तन
हृदय-वीण झूम' लागल !

नयनक जल सँ नहाय
प्राणक सार जुटाय दौड़ैत छी उपवन मे
फाग कत' ? फगुआ कत' ?
चारु दिसि आँखि खोजैत रहल
बसन्ती बयार नइ-कत्ती कोनो सिहकब नइ
वएह नोर वएह मुस्कान,
किछ नीक, किछ बेजाए
किछ ठीक, किछ गलत, सभ दर्द अँइठ
सभ साँस रुसल
प्राण सँ निसांस फूटल
केओ किछ नइ बाजल, केओ किछनइ देलक
दुस्सह क्रन्दनक संग अनचीन्हार नोरक बरखा
नयन कें सागर बनबैत रहल
अन्तरक उछाह साँझक सुरुज सन
बीतराग होइत रहल ।

दूर बहुत दूर नीलगगन मे ताराक फूल
विहुँसल देखि
अपन मोन कें अपनहि ठगैत रहलौं
जीवन कें बसन्त बनबैत रहलौं !!!

दीपशिखा सन निरंतर जरैत हमर मोन
प्रभो !
अहाँक पथ आलोकित क' रहल अछि ।

प्रियतम अओता एहि बाट सँ,
अपन अन्तर्बाह्य शुचिता सँ
देवता जकाँ देह आ देही कें संशुद्ध क'
अपन चेतनाक वर्त्तिका सँ
स्वयं अपना कें डाहि
ओहि विश्व मोहन भुवन सुन्दरक
मधुर चित्र अंकित करैत
नयन कमलक अर्घ्य चढ़बैत
साँस साँस मिलन राग गाबि रहल अछि
प्रभु अओताह !

मोनक उजड़ल करील मे आय
कन्हैयाक वंशी बाजि उठल !
अहाँ सँ मिलबा लेल
प्रभंजन मे पड़ल तिनका सदृश उड़ैत
अहाँ लग पहुँचि गेलौं
हा, हमर पागल मोन !
नदीक तीर पर पहुँचला उपरान्तो लोग
कोना पिआसल रहि जायत अछि
अनुभूति भेल !
अहाँ लग आबियो कें अहाँक दर्शन सँ
वंचित रहि जायत छी
अहाँक देखवा सँ लाचार भ' जायत छी।
तखन
हवा मे हेलइत अहाँक मोहक शब्दजाल सँ
बन्हल बन्हल, हमरा अहींक स्पर्शक,
अहाँक देह गंधक, अनुभूति होयत अछि
अहाँ विदेह रहितो हमर कल्पना मे
सदेह भ' जायत छी
हम अहाँक संग क्षण क्षण छी ॥

●

हम मूढ़
कतेक गीत-अगीत गाबि गेलौं !
सजल जलद पलक नेने,
लघु सरिताक विमल प्रवाह मे
सघन अरण्यक कँटकित बाट मे
खोजि रहल छलौं अहाँ कें
दिगभ्रमित सन !
थाकि हारि निराश भय आय जखन
अपन अन्तरतम मे देखवाक क्षण भेंटल
तँ अहाँ ओहि ठाम विराजमान छी।
चकित भ्रमित, अन्तर अवस्थित
मंद मंद मुस्काइत ओहि छवि कें
अनाम अनुभूतिक कंपन संग
निरखैत रहलौं !
एहि अपरूप रूपक संधान मे
हमर मोन पार्थिव-अपार्थिव दुनू लोक मे
विप्रलब्धा नायिका सन भटकि आयल छल

हमर निष्पंद शिरा मे
जलतरंग बजबैत, अपन तेज सँ प्रखर, बैसल
मोहिनी मुस्कान सँ सजल !
अपलक, हृदय हमर
'ययौ न तस्थौक' हाल मे बेसुध छल
आह ! बेसुधिक ओ मधुबेला !!!

●

अहाँक उपस्थितिक आभास सँ हम
अभिमानक अहंकार सँ भरि जाय छी।
प्रकृतिक कण कण मे अहाँक हासक लालिमाक
अनुभूति सँ अनुरंजित भ' जाय छी।

हम अपन समस्त तन मधुऋतुक
सिंगार सँ सजाय नेने छी
कुन्तल-राशि मे साकार इन्द्रधनुष
जगमगाय नेने छी।
फूल फूल मे हास भरि गेल
कली कली मे उल्लास
अहाँक अन्तर सँ लागि
जीवन कें विश्वास भेटि गेल।
नीरव उर मन्दिर मे इ मोन प्रतिपल
अहाँक ध्यान करैत अछि।

हमर मोन मे जाहि उदात्त अराधनाक
अवधारण भ' रहल अछि
ओकर लक्ष्य, ओकर आराध्य अहीं छी
प्रभो !
हमर उपासना कें सार्थक करु नाथ !

अहाँ तीर्थ कर चाहैत छी,
हमरा लग आबि जाउ !
सभटा मूर्त्ति हमर अन्तर मे विराजमान अछि।
सर्भ एकेटा
संशय-असंशय, तर्क कुतर्क सँ अपना कें
फराक करु।

हमर हृदय एकटा तीर्थ स्थल बनि गेल
जत' जत' हमर यायावरी तन मोन
यात्रा करैत गेल
सभटा खजाना समेटि अन्तर मे
सहेजि लेल।
डुमरा मे भैरव-भैरवी, बड़गाम मे ज्वालामुखी
कटरा मे भगवतीक आँखि, चरणपादुका सं बैष्णो देवी
दक्षिणेश्वर कालीक कतेको रूप, कामाख्याक सुरम्य अरण्य
महाष्टमीक उग्रतारा, अढ़हुल साजल दंतकाली
आमीक अंबिका, हर की पैड़ीक पावनी गंगा
माता मरियम, माता मनसा, माता गायत्री, बंबईक भगवती
महालक्ष्मी
द्वादश ज्योतिर्लिंगक संगे पिण्डेश्वर, सिंहेश्वर, रणवीरेश्वर
महादेव

मीराक द्वारकाधीश, अयोध्याक राम, वराहक्षेत्रक वराहदेव
पुष्करक ब्रह्मा, अजमेरक दरागाह, मस्जिदक अजान
अमृतसरक स्वर्णमंदिर
संत साईं बाबा, देवराहा बाबा, वामाक्षेपा
लक्ष्मीनाथ गोसाईं मेंही बाबा
संगहि संगम कातक सुप्त हनुमान
सभ अपन विराट् रूपक संग
हमर अन्तरक लघुता मे अपन बास-डीह
बना नेने छथि !!

●

पिता बनि अहाँ
हमरा पर अपन ममत छिरियावैत छी
भाइ बनि
हमर रक्षाक भार लैत छी
संगी बनि अहाँ हमरा सहारा देलौं
हमर व्यथा बाँटि हमर सोचक संग
चललौं।
हमर प्रेरणा बनि, आगु बढ़वाक
उत्साह देलौं
प्रेमी बनि हमर पीर केँ मुस्कान देलौं
कतेक रूप अछि अहाँक !
प्रत्येक रूपमे डुबि जेबाक
मोन होइछ
अहाँक पूजा मे सुख बनि अपना केँ उत्सर्ग करबाक
मोन होइ'छ
नीलवर्णी शय्या पर सूतब, अहाँक रंग मे
रंगि जेवाक मोन होइछ······

●

गोपाल कृष्ण !
"प्रियतम को पतिया लिखु जो कहीं होय बिदेस
तन मे, मन मे, नयन मे, ताको कहाँ सनेस ?"
द्वारका मे अहाँक मोहिनी रूप देखि,
विभोर भ' गेलौं
नयन अपलक, वाणी मूक, राति सं भोर भ' गेलौं !
हम की विनती करी, हमर रोम-रोम मे
अहाँ समाय गेलौं
मीरा लोक-लाज छोड़ि अहाँ लेल
समर्पित भ' गेलीह
निराकार, निर्गुणक महिमा, सगुन साकार मे
समाय गेलीह।

अहाँक सौंदर्य—अहाँक लावण्य
अहाँक पावनता, अहाँक देवत्व
नीन मे सूतल मानवक आनन सन !
एहि सुप्त सौंदर्य केँ ज्योतिक प्रथम चरण मे
देख' चाहैत छी मंगल लेल
ज्योतिक अंतिम चरण मे देख' चाहैत छी
शुभ स्वप्नक लेल
मृत्यु सँ पूर्व देख' चाहैत छी, मुक्ति लेल।

अहाँक सौंदर्य हमरा व्यूह मे
घेरि नेनें अछि
हमरा एहि व्यूह सँ विश्रृंखल नय करु प्रभु !

●

(गद्यगीत)